कृषि: विकसित भारत के लिए एक समग्र दृष्टिकोण

प्रो. (डॉ) बलविंदर शुक्ला

कुलपति, एमिटी विश्वविद्यालय

भारत में विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के साथ समृद्ध कृषि विरासत है जो भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है। प्रौद्योगिकी, नवाचार और उद्योग की इस आधुनिक दुनिया में, कृषि देश की अर्थव्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसा कि हमारा देश "विकसित भारत" के दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रहा है, कृषि का क्षेत्र स्थिरता के साथ परिवर्तन के लिए एक केंद्रीय मंच के रूप में कार्य करता है। कृषि केवल खाद्य उत्पादन के बारे में नहीं है क्योंकि यह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), ग्रामीण विकास के साथ-साथ रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देती है। एक बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत के लिए मुख्य चिंता यह है कि केवल कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने से, "विकसित भारत" के दृष्टिकोण से राष्ट्र का समग्र विकास कृषि को ऊपर उठाए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण, भारत को "विकसित भारत" बनाने के लिए, कृषि को एक स्थायी और विविध क्षेत्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है ताकि एक बड़ी जनसँख्या को भोजन मिल सके जो आजीविका का समर्थन करे और राष्ट्रीय प्रगति में योगदान दे। विकसित भारत/ 2047 का आह्वान 2047 तक भारत को एक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र के रूप में विकसित करने के स्थायी दृष्टिकोण को दर्शाता है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत में 2022 तक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (जीडीपी) 2390 डॉलर है। इस प्रकार, विकसित राष्ट्र का यह स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रति व्यक्ति जीएनआई में छह गुना वृद्धि एक ऐसा कार्य है जो किसानों की आय में

समावेशिता और कृषि सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर की माँग करता है।

संसाधनों के कुशल उपयोग, जैविक खेती, फसल विविधीकरण और लचीलेपन जैसे प्रमुख कारकों के साथ खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सतत कृषि पद्धतियाँ महत्वपूर्ण बन जाती हैं। कृषि में स्थिरता पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करती है, डेयरी, पोल्ट्री, खाद्य प्रसंस्करण आदि सहित कृषि के विभिन्न संबद्ध क्षेत्रों में विकास के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर आय विविधीकरण में योगदान कर सकते हैं और इस प्रकार "विकसित भारत" के दृष्टिकोण के साथ संरेखित हो सकते हैं। भारत में कृषि विपणन को 2047 तक डिजिटल और स्मार्ट अभिनव प्रौद्योगिकियों के साथ एक आदर्श बदलाव से गुजरना होगा जो किसानों और खरीदारों के बीच की खाई को पाट सके। भारतीय कृषि भविष्य में पूरी क्षमता के साथ वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार है और इस प्रकार यह विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। कृषि देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 18 प्रतिशत का योगदान देती है और इसलिए इसका विकास भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कृषि क्षेत्र को उन्नत कृषि तकनीकों और कटाई के बाद और मूल्य संवर्धन श्रृंखलाओं में व्यवस्थित सुधारों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी जनसँख्या को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। किसानों की आय दोगुनी करना, डिजिटल कृषि, बागवानी के एकीकृत विकास के लिए मिशन जैसी सरकारी पहलों की भूमिका विकसित भारत के इस दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण रही है।

'विकसित भारत' के दृष्टिकोण के साथ कृषि का संरेखण सटीक खेती, आईओटी और एआई आधारित एनालिटिक्स का उपयोग, ई-नाम (इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार) जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म, मौसम की निगरानी जैसे हस्तक्षेपों के साथ डिजिटल परिवर्तन और नवाचार को गले लगाता है, जो पारंपरिक खेती के साथ मिलकर फसल उत्पादकता को काफी बढ़ा सकता है जो किसानों और ग्रामीण समुदाय के लिए उच्च आय और विकास सुनिश्चित करता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ड्रोन, ट्रैक्टर और अन्य सुव्यवस्थित कृषि कार्यों में प्रगति को बढ़ावा देता है जो कृषि को ष्विकसित भारतष् की ओर बढ़ाता

है। टिकाऊ कृषि के साथ जलवायु लचीला प्रौद्योगिकी का एकीकरण किसानों को टिकाऊ कृषि के साथ ष्विकसित भारतष् के दृष्टिकोण को संरेखित करने और बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाता है, पीएम-किसान, प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना, परंपरागत कृषि विकास योजना जैसी नीतियां टिकाऊ और लचीली कृषि के अभ्यास से 2047 तक 'विकसित भारत' का सपना साकार होगा, जिसमें कृषि के अभ्यास में आमूलचूल परिवर्तन होगा। इसके लिए सरकार, निजी क्षेत्र, शिक्षा, समाज और किसानों को शामिल करने वाले हितधारकों के बीच सहयोग की आवश्यकता है।

कृषि न केवल अर्थव्यवस्था का एक क्षेत्र है, बल्कि यह भारत के विकास का आधार है, जिसमें टिकाऊ प्रथाओं, समावेशी नीतियों, तकनीकी नवाचारों पर जोर दिया जाता है, जो समग्र दृष्टिकोण की ओर ले जाते हैं, जो ष्विकसित भारतष् के लिए एक आवश्यक घटक है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों को कृषि-नवाचार के लिए केंद्र बनाने के लिए सहयोग करने की आवश्यकता है, जो किसानों की वित्तीय क्षमता को बढ़ाता है और इस प्रकार देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान देता है। ई-प्लेटफॉर्म कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण और सहायक हैं, जो ग्रामीण और आर्थिक विकास के दृष्टिकोण को पोषित करते हैं, जो विकसित राष्ट्र निर्माण में सहायक है। भारतीय कृषि में नवाचार, स्थिरता और उत्पादन के प्रतीक के रूप में चमकने के लिए अन्य देशों के लिए एक रोल मॉडल बनने की क्षमता है, क्योंकि कृषि क्षेत्र में सशक्तिकरण 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण के साथ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।